शोध प्रतिवेदन

"जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियोंकी पाठ्य सहगामी क्रियाओं व व्यक्तित्व विकास में सह सम्बन्ध का अध्ययन"

निर्देशिका
डॉ. एकता पारीक
(प्राचार्या)

प्रस्तुतकर्त्री
नीतू सिंह जादौन
(एम.एड. छात्रा)

बियानी गर्ल्स बी.एड़ कॉलेज, जयपुर(राजस्थान)
(सत्र 2015-17)

प्रस्तावना :—

"Syllabus" में क्या रखा है, उसके बाहर की दुनिया ही तो अनजान है और जो अनजान है वही तो Interesting है।'' ऐसे उच्च कोटि के विचार एवं दूरदृष्टि रखने वाले किसी महापुरूष के विचारों का ही परिणाम रहा होगा कि कालान्तर में शिक्षाविद्ों, गणमान्यों एवं जनसामान्य का ध्यान पाठ्य सहगामी क्रियाओं की ओर आकर्षित हुआ हो। विद्यालय की चारदीवारी में गिनती मात्र की पुस्तकें पढ़ कर कोई भी अपना सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास नहीं कर सकता है। महान वैज्ञानिक डॉ० होमी जहाँगीर भाभा पेन्टिग किया करते थे, वहीं आइन्सटीन वाइलिन बजाया करते थे। ऐसे अनेको उदाहरणों से इतिहास सुशोभित है।

वर्ष 2016 को पण्डित दीनदयाल उपाध्याय की जन्म शताब्दी वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। वे भी छात्र अवस्था से आर.एस.एस. के सदस्य एवं बाद में संघप्रमुख रह चुके हैं। अनेको लोगों के सम्पर्क में आने एवं साहित्य पढ़ने का ही प्रभाव था कि वे एक अच्छे वक्ता भी थे जो अपने उद्भोदनों से भारतीय जनता में जोश का संचार कर दिया करते थे। 1962 में चीन के साथ भारत युद्ध से तुरन्त

पहले जब तत्कालीन प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू को भद्दी गाली दी गई जिसे दोहरना भी अशोभनीय होगा, के जवाब में पण्डित उपाध्याय जी ने ही जनता से एवं राजनैतिक पार्टियों से अहं त्याग कर भारत के आत्मसम्मान की रक्षा हेतु एकजुट होने का आव्हान किया था जो उनके महान व्यक्तित्व का ही उदाहरण है। स्वामी विवेकानन्द यदि विद्यालयी ज्ञान के सहारे ही पलते–बढ़ते तो क्या वे अल्पआयु में उच्च कोटि के व्यक्तित्व को धारण कर पाते? उनकी माताजी द्वारा निर्मित धार्मिक एवं सांस्कृतिक वातावरण तथा उनके गुरू श्री रामकृष्ण परमहंस का सानिध्य एवं माँ काली के मन्दिर का नित्य अवलोकन ही उनके लिए सहगामी क्रियाओं की श्रेणी में था और सम्भवतः इसी का परिणाम था कि वे संवेगात्मक रूप से दृढ़ एवं परिपक्व थे। भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी नित्य ही अपने पिता एवं दादा की राजनैतिक चर्चाएँ सुना करती थी। वे उनके विचार–गोष्ठियों का भी हिस्सा बनती थी। उनके पिता के लिखे गए पत्र उनके लिए विद्यालयी पाठ्यक्रम से अलग परन्तु महत्वपूर्ण पठन सामग्री हुआ करती थी। इन्दिरा जी के संवेगात्मक एवं भाषात्मक विकास में इन विचार–गोष्ठियों, आन्दोलनों, पत्रों का उल्लेखनीय योगदान रहा है।

महान् राजनैतिज्ञ एवं अर्थशास्त्री चाणक्य का कथन था कि ''शिक्षा अग्नि को प्रज्जवलित करने जैसी है ना कि बर्तन भरने जैसी।'' वर्तमान में यही कार्य किया जा रहा है। हम मात्र विद्यार्थी को वार्षिक पाठ्यक्रम का ज्ञान करा कर उसके परीक्षा परिणाम के आधार पर उसका मूल्यांकन कर रहे हैं। हमें उसकी चिन्तन शक्ति को प्रश्नों के माध्यम से जागृत करना है। हमें उसके संवेगों का मार्गान्तीकरण करना है एवं उसकी निरर्थक एवं अशोभनीय भाषा को सार्थक गहन विचारों से पूर्ण बनाना है। इस हेतु हमें विद्यार्थी को साहित्य व संस्कृतिक के समीप लाना होगा। उसे शैक्षिक यात्राओं का हिस्सा बनाना होगा। विद्यार्थी को वाद–विवाद, कविता एवं कहानी पठन–पाठन, भाषण प्रतियोगिता शैक्षिक समुदाय आदि से परिचित करना होगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि ये पाठ्य सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेंगी।

समस्या का औचित्य :–

प्रायः यह देखा जाता है कि माता–पिता अपने बच्चों से विद्यालयी शिक्षा के दौरान श्रेष्ठतम परिणामों की आशंका रखते है। इन श्रेष्ठ परिणामो में परिक्षाओं के प्राप्तांको का स्तर मात्र शामिल है। विद्यार्थी भी बिना स्वं को जाने माता–पिता की इस आकांशा की संतुष्टि हेतु प्रयत्नरत बने रहते है। क्या मात्र बुद्धिमता ही श्रेष्ठता का परिचायक है? इसमें कोई संदेह नहीं की बुद्धि ही मानव को अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाती है परन्तु बुद्धि का पैमाना समस्या समाधान की योग्यता को बनाया जाना चाहिए ना कि प्राप्तांको को।

मानव (किशोर) के व्यक्तित्व के निर्माण एवं विकास में वंशानुक्रम के साथ–साथ वातावरण जिसमें परिवार, विद्यालय एवं समाज शामिल है, का भी प्रभाव पड़ता है। विद्यालय द्वारा दी जाने वाली औपचारिक शिक्षा जिसमें पाठ्यपुस्तकें प्रमुख रूप से पढ़ाई जाती हैं, विद्यार्थियों के विकास हेतु पर्याप्त नहीं है। इस हेतु उन्हें पाठ्यान्तर क्रियाओं में संलग्न किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक, नैतिक एवं सामाजिक विकास द्वारा एक उच्च कोटी के व्यक्ति वाले नागरिक तैयार किए जा सकते हैं। उक्त प्रकरण में पाठ्य सहगामी क्रियाएँ उत्तम विकल्प बनकर सामने उभरी हैं।

खेल, एन.सी.सी., स्काउटिंग, सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं शैक्षिक भ्रमण आदि ऐसी पाठ्य सहग्रामी क्रियाएँ हैं, जिनके द्वारा विद्यार्थियों में अनुशासन, ईमानदारी, सत्यता, परिश्रम की महत्ता, निष्काम सेवा, नेतृत्व क्षमता, सहयोग, राष्ट्रीयता की भावना, कर्त्तव्यनिष्ठा एवं जागरूकता का विकास किया जा सकता है।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं का महत्व सर्वविदित होते हुए भी इनको प्रभावपूर्ण ढंग से लागू नहीं किया जा सका है। इस विषय में विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं विद्यालय प्रबन्धन की अरूचि का कारण सम्भवतः उनके व्यक्तिगत ही हो सकते हैं। विचारणीय बिन्दु यह है कि क्या कहीं इस समस्या के पीछे कोई अन्य कारण भी छिपे हैं? क्या वास्तव में पाठ्येत्तर क्रियाएँ विद्यार्थियों को श्रेष्ठ व्यक्तित्व प्रदान करती हैं? अथवा इन क्रियाओं को करने में वे समय की बरर्बादी, कठोर अनुशासन एवं मूल पाठ्यक्रम से दूरी अनुभव करते हैं?

अधिकांश विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाएँ मात्र राष्ट्रीय महत्व के दिवसों पर नृत्य–गायन तक सिमट कर रह गई है। खेल जो शारीरिक एवं मानसिक

विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, को विद्यार्थी पढ़ाई के बोझ तले विस्मृत करते जा रहे हैं। किशोर सामाजिक होने के बजाए एकान्तप्रिय बनते जा रहे हैं। रटन्त विद्या ने विद्यार्थियों को वास्तविक अनुभवों से दूर कर दिया है। विद्यार्थी स्वार्थी, बेईमान, आक्रामक और वाचाल बन गए हैं। विद्यार्थी अपने से बड़ों को समुचित आदर–सम्मान नहीं देते हैं और उनकी भाषा में भी अभद्रता झलकती है। छोटी–छोटी बातों को दिल से लगा लेना, शान्ति के लिए अनुचित मार्ग पर चलना, प्रत्येक बात का जवाब गुस्से से देना, किशोरावस्था के संवेगों पर नियन्त्रण ना रख पाना, अति प्रसन्नता व अति दुःखद स्थिति में अपना आवेग बढ़ा लेना आदि समस्याएँ किशोर–किशोरियों में आम हो चली है।

समस्या कथन –

"जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियोंकी पाठ्य सहगामी क्रियाओं व व्यक्तित्व विकास में सह सम्बन्ध का अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य –

1. जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पाठ्य सहगामी क्रियाओं व व्यक्तित्व विकास में सह सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं व व्यक्तित्व विकास से सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं में पाठ्य सहागामी क्रियाओं व व्यक्तित्व विकास में सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
4. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के खेलकूद पाठ्य सहागामी क्रियाओं पाठ्य सहगामी क्रिया व उनके संवेगात्मक व्यक्तित्व विकास में सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना।
5. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक गतिविधि पाठ्य सहागामी क्रिया व भाषात्मक व्यक्तित्व विकास के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना।
6. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के खेलकूद पाठ्य सहगामी क्रिया व उनके भाषात्मक व्यक्तित्व विकास के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना।

7. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक गतिविधि पाठ्य सहगामी क्रिया व उनके संवेगात्मक व्यक्तित्व का विकास में सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ –

1- जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्राप्तांको व्यक्तित्व विकास के प्राप्तांको में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

2- उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों में पाठ्य सहागामी क्रियाओं में प्राप्तांको व व्यक्तित्व विकास के प्राप्तांको में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

3- उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्राप्तांको व व्यक्तित्व विकास के प्राप्तांको में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

4- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के खेलकूद पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्राप्तांको व उनके संवेगात्मक व्यक्तित्व विकास के प्राप्तांको में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

5- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक गतिविधि पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्राप्तांको व भाषात्मक व्यक्तित्व विकास के प्राप्तांको में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

6- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के खेलकूद पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्राप्तांको व भाषात्मक व्यक्तित्व विकास के प्राप्तांको में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

7- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक गतिविधि पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्राप्तांको व संवेगात्मक व्यक्तित्व विकास प्राप्तांको में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

अध्ययन का महत्व –

शोधार्थी द्वारा अध्ययन के लिए चुना गया विषय अति संवेदनशील व वर्तमान समय की मांग के अनुरूप है। प्रस्तुत शोध विद्यार्थियों को अपने संवेगों की पहचान करने व उन्हें परिमार्जित करने तथा जीवन लक्ष्य की ओर बढ़ने का अवसर प्रदान

करेगा। प्रस्तुत शोध के माध्यम से हम विद्यार्थियों को खेलकूद व शैक्षिक गतिविधियों का महत्व बता सकेंगे। अभिभावक व शिक्षक जान पाऐंगे कि उनके बच्चे किस प्रकार शनैः–शनैः व्यक्तित्व का विकास भी कर सकते हैं और व्यक्तित्व का पतन भी। यह शोध व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयामों के समान भाषात्मक विकास व संवेगात्मक विकास की ओर जन सामान्य का ध्यान आकर्षित करेगा।

तकनीकी शब्दों की व्याख्या –

प्रस्तुत शोध में निम्न मुख्य शब्दों को विश्लेषित किया जाना आवश्यक है–

(i) **पाठ्य सहगामी क्रियाएँ** –पाठ्य सहगामी क्रियाएँ वे क्रियाएँ होती हैं, जिनमें विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक एवं सेवगात्मक विकास होता है, चाहे वे क्रियाएँ विद्यालय के अन्दर आयोजित हों या बाहर हो।

(ii) **व्यक्तित्व** –दार्शनिक दृष्टिकोण से ''व्यक्तित्व पूर्णता का एक आदर्श है। यह आत्मज्ञान है।'' समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से ''व्यक्तित्व उन समस्त गुणों का संगठन है जो कि समाज में व्यक्ति का कार्य तथा पद निश्चित करता है।'' मनोवैज्ञानिक दृष्टि से व्यक्त्वि का सम्बन्ध वंशानुक्रम एवं पर्यावरण दोनों से है।''

(iii) **संवेगात्मक विकास** –''संवेग किसी प्राणी की गतिमय और हलचलपूर्ण अवस्था है। व्यक्ति को स्वयं यह अपनी भावनाओं की उत्तेजनापूर्ण स्थिति प्रतीत होती है। दूसरे व्यक्ति को यह उत्तेजित अथवा अशांत मांसपेशियों और ग्रन्थियों की एक क्रिया के रूप में दिखाई देती है।''

मैक्डूगल ने व्यक्ति के 14 मूल संवेगों को बताया है जिसके कारण व्यवहार के तीनों पक्ष ज्ञानात्मक, भावात्मक व क्रियात्मक पक्ष कार्य करते हैं।

(iv) **भाषात्मक विकास** –मनुष्य के सामाजिक प्राणी होने के नाते भाषा समाज से सीखी गई वह क्रिया है जिसे व्यक्ति जन्म लेते ही किसी–न–किसी रूप में (हाव–भाव द्वारा) ग्रहण करता है एवं जीवन पर्यन्त स्व तथा जीवित प्राणियों के समाज से सम्पर्क बनाए रखता है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त विधि :–

- शोध अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

अध्ययन के चर –

आश्रित चर – पाठ्य सहगामी क्रियाएँ

स्वतन्त्र चर – विद्यार्थी

प्रदत्तों के स्त्रोत –

(a) प्राथमिक स्त्रोत –

जयपुर शहर के राजकीय व निजी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी।

(b) द्वितीयक स्त्रोत –

किताबें, लाइब्रेरी, इन्टरनेट, पूर्व में किए गए अनुसन्धान।

प्रदत्तों की प्रकृति –

मात्रात्मक व गुणात्मक।

परीसीमन–

(i) प्रस्तुत शोध जयपुर शहर तक ही सीमित किया गया है।

(ii) प्रस्तुत शोध में जयपुर जिले के 3 राजकीय व 3 निजी विद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि से किया जाएगा।

(iii) प्रस्तुत शोध में केवल कला वर्ग के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जाएगा।

(iv) प्रस्तुत शोध में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अन्तर्गत खेलकूद व शैक्षिक क्रियाओं को शामिल किया जाएगा।

(v) व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयामों में से विद्यार्थियों के संवेगात्मक एवं भाषात्मक विकास को सम्मिलित किया जाएगा।

(vi) शोध कार्य के लिए न्यादर्श के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों (छात्र एवं छात्राओं) को शामिल किया जाएगा।

जनसंख्या –

जयपुर शहर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी जनसंख्या रूप में प्रयोग किए जाऐंगे।

न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में राजकीय विद्यालयों के 50 विद्यार्थी एवं निजी विद्यालय के 50 विद्यार्थियों को शामिल किया जाएगा।

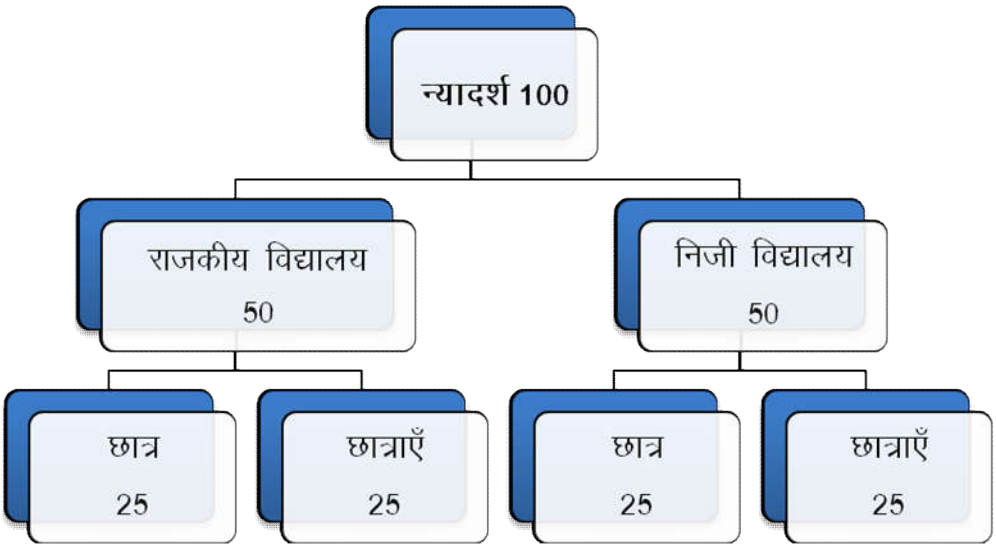

उपकरण

- प्रस्तुत शोध मे स्वनिर्मित प्रश्नावली उपकरण के रूप में काम ली जाएगी।
- विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाएँ आयोजित की जाएगी।

सांख्यिकी

- प्रस्तुत शोध में मध्यमान एवं सहसम्बन्ध सांख्यिकी रूप में प्रयोग किये जायेंगे।

परिकल्पनाओं से प्राप्त निष्कर्ष :–

परिकल्पना–1 उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्राप्तांको व्यक्तित्व विकास के प्राप्तांको में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पाठ्य सहगामी क्रियाओं व व्यक्तित्व विकास में सार्थक सहसम्बन्ध होता है। वे विद्यार्थी जो इस प्रकार की सहगामी क्रियाओं में भागीदारी रखते हैं। उनका भाषात्मक एवं संवेगात्मक विकास उच्च कोटि

का होता है। खेल, साहित्यिक क्रियाएँ विद्यार्थियों को परिस्थिति अनुसार अपने संवेगों पर नियन्त्रण रखना एवं उचित व सधे शब्दों के प्रयोग से शैली सुधार का अवसर प्रदान करते हैं।

परिकल्पना–2 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों में पाठ्य सहागामी क्रियाओं में प्राप्तांको व व्यक्तित्व विकास के प्राप्तांको में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

उच्च माध्यमिक स्तर के किशोर छात्र जो कि खेलकूद एवं शैक्षिक क्रियाओं में भागीदारी रखते हैं, उनका व्यक्तित्व भाषात्मक एवं संवेगात्मक दृष्टि से अच्छा विकसित होता है। वे छात्र अपने दमित इच्छाओं व कुण्ठाओं को साहित्य व क्रीड़ा के माध्यम से मार्गान्तीकरण कर स्वस्थ जीवन जीते हैं।

परिकल्पना–3 उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्राप्तांको व व्यक्तित्व विकास के प्राप्तांको में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

उच्च माध्यमिक स्तर की किशोरावस्था की छात्राएँ जो कि खेलकूद एवं शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेती हैं उनका व्यक्तित्व विकास भाषात्मक एवं संवेगात्मक दृष्टि से अच्छा होता है। वे अपनी दमित इच्छाओं एवं कुण्ठाओं को साहित्य एवं क्रीड़ा के माध्यम से व्यक्त कर स्वस्थ जीवन जीती हैं।

परिकल्पना–4 उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के खेलकूद पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्राप्तांको व उनके संवेगात्मक व्यक्तित्व विकास के प्राप्तांको में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी शरीर को चुस्त, प्रसन्न व स्वस्थ बनाने के लिए खेलकूद में भाग लेते हैं। इनमें सफलता प्राप्त होने पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में धनात्मक गुणों का विकास होता है। विद्यार्थियों में आत्म की समझ, सह अस्तित्व की भावना का विकास होता है। उनमें संवेगों की अभिव्यक्ति एवं परिपक्वता का भी विकास होता है।

परिकल्पना–5 उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक गतिविधि पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्राप्तांको व भाषात्मक व्यक्तित्व विकास के प्राप्तांको में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी जो कि शैक्षिक गतिविधियों में भागीदारी रखते हैं उनके ज्ञानार्जन एवं शब्दकोश में निरन्तर वृद्धि होती रहती है। शब्दों का

सन्तुलित निर्वाह आत्मविश्वास उत्पन्न करता है जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को विशिष्ठ बनाता है। ऐसे विद्यार्थियों का भाषात्मक व्यक्तित्व विकास उच्च कोटि का होता है।

परिकल्पना–6 उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के खेलकूद पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्राप्तांको व भाषात्मक व्यक्तित्व विकास के प्राप्तांको में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

उच्च माध्यमिक स्तर के वे विद्यार्थी जो खेलकूद, व्यायाम आदि क्रियाओं में भाग लेते हैं सामाजिकता एवं सामूहिकता के गुणों से परिपूर्ण होते हैं। अपने गुरूजनों, प्रशिक्षकों, वरिष्ठ खिलाड़ियों, साथी खिलाड़ियों आदि के निरन्तर सम्पर्क में रहने एवं वार्तालाप का प्रभाव उनके स्वयं के भाषात्मक विकास भी पड़ता है। वरिष्ठ को वरीयता एवं सम्मान देना तथा कनिष्ठ को भी आदरपूर्वक सम्बोधित करना सीखते हैं जो उनके व्यक्तित्व में निखार लाता है।

परिकल्पना–7 उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक गतिविधि पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्राप्तांको व संवेगात्मक व्यक्तित्व विकास प्राप्तांको में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में जो कि शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेते हैं, संवेगात्मक विकास उच्च कोटि का पाया जाता है। ऐसे विद्यार्थी अपनी शक्तियों एवं योग्यताओं को पहचान कर उन्हें विभिन्न वस्तुओं का उपयोग कर सकने तथा दूसरों के साथ प्रेम व सहानुभूति प्रकट करने तथा उपयुक्त संवेदना व्यक्त करने में सक्षम होते हैं। साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों में विभिन्न संवेगों के उपयुक्त प्रदर्शन का अवसर प्रदान करती है तथा उनके अशान्त मन को शान्त करने अनउत्तरित प्रश्नों के हल प्राप्त करने में सहायक होती है।

शैक्षिक निहितार्थ

विद्यालय प्रशासन हेतु सुझाव–

विद्यालय प्रशासन की भूमिका सर्वोपरी है, एक बालक के व्यक्तित्व विकास में क्योंकि विद्यालय प्रशासन ही उस माहौल का निर्माता एवं संचालनकर्ता है, जो विद्यार्थियों को सीखने, बढ़ने एवं सामाजिक होने के लिए कार्य करता है। अतः विद्यालय प्रशासन को चाहिए कि वह अपने विद्यालय में अधिक से अधिक शैक्षिक

एवं साहित्यिक गतिविधियां आयोजित करवाये, ताकि सभी विद्यार्थियों को एकाधिक बार ऐसे कार्यक्रमों में सम्मिलित एवं भागीदार बनाया जा सकें। यदि प्रशासन इन क्रियाओं को गंभीरता से नहीं लेता है तो शिक्षक एवं विद्यार्थियों में भी शिथिलता आना स्वाभाविक है। विद्यालय प्रशासन को पाठ्य सामग्री सहगामी क्रियाओं के महत्व को समझते हुए इन आयोजन की अनुमति देनी चाहिए एवं श्रेष्ठ विद्यार्थियों को पुरस्कृत कर प्रोत्साहन देना चाहिए।

अध्यापकों हेतु सुझाव–

विद्यार्थी सर्वाधिक समय अपने अध्यापकों के साथ बिताता है। इसी कारण विद्यालय वातावरण में एक छात्र जितना अपने शिक्षक के समीप होता है उतना अन्य कक्षाओं के अध्यापकों एवं प्रशासन के अन्य व्यक्तियों के नही। छात्र का व्यक्तित्व, उसकी विशेषताएं, उसी कमीयां एवं उसकी योग्यताएं एक कक्षाअध्यापाक भली–भांति अवलोकित कर सकता है। इस कारण शोधार्थी का अध्यापकों हेतु सुझाव है कि वे अपने प्रत्येक छात्र को गंभीरता से लेते हुए उनकी आवश्यकताएं एवं उनके सामर्थ्य में उचित सामंजस्य बिठाते हुए उन्हें ऐसी साहित्यिक एवं शैक्षिक गतिविधियों में भागीदार बनाए जो ना केवल विद्यार्थियों का व्यक्तित्व विकसित करें, बल्कि उन्हें स्वनियंत्रण एवं आत्मगौरव की भावना से भी भर दें।

सरकार एवं नीति निर्माताओं को सुझाव–

पाठ्य सहगामी क्रियाओं का महत्व सर्वविदित है। इन क्रियाओं में भागीदारी रखने वाले छात्र–छात्राएं सामान्य विद्यार्थियों से अलग एवं विशेष व्यक्तित्व रखते है। सरकार एवं नीति निर्माताओं को चाहिए कि वे पाठ्यक्रम में सभी प्रकार की पाठ्य सहगामी क्रियाओं को समान भारांक प्रदान करें एवं यह सुनिश्चित करें कि उनकी बनाई नीतियां क्रियांन्वित भी हो रही है। ऐसे विद्यालयों एवं संस्थाओं को अनुदानित एवं प्रोत्साहित करें जो पाठ्यसहगामी क्रियाओं के आयोजन में सक्रियता रखते हो।

अभिभावकों हेतु सुझाव–

अभिभावकों को इस तथ्य को समझना चाहिए कि बालक माता–पिता की दबी हुई इच्छाओं को पूरा करने वाला एकमात्र आसरा ना होकर स्वयं भी इच्छा धारण करने वाला एवं संवेगों के भँवर में उलझा, राह तलाशता प्राणी है।

माता–पिता को अपने किशोर बालक–बालिकाओं को ऐसी पाठ्यसहगामी क्रियाओं में व्यस्त रखना चाहिए जहां वे अपने संवेगों पर नियन्त्रण रखना एव ंअपने मनोभावों को उचित शब्दों एवं मर्यादा में अभिव्यक्त करना सीखें। उन माता–पिता को भी शोधार्थी सुझा देना चाहती है, जो पाठ्य सहगामी क्रियाओं में अति संलग्नता के कारण अपने बालकों को अवसाद में भेजने वाले बन जाते है। सन्तुलित भागीदारी ही सन्तुलित अभिव्यक्त का विकास कर सकती है।

समाज के अन्य पक्षों को सुझाव–

शोधार्थी सामाजिक वातावरण के अध्ययनों यथा– समुदाय, मित्र, परिवार एवं रिश्तेदार आदि को भी सुझाव देना चाहती है कि किसी भी बालक या बालिका के प्रति पूर्वाग्रह से मुक्त रहे। स्वतन्त्र रूप से चिन्तन करने वाला माहौल या वातावरण का निर्माण करें। भेड़–चाल में चलाने के लिए किसी बालक विशेष पर दबाव ना बनाए, ना ही उस बालक के अभिभावक या शिक्षकों पर उसे किसी श्रेणी विशेष का बालक बनाने पर जोर दें। शनैःशनैः पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भागीदारी स्वंय उसे इस ओर आकर्षित कर लेगी एवं धीरे–धीरे ही वह बालक अपने संवेगों एवं भाषा पर नियन्त्रण रखना सीख जाएगा।

भावी शोध हेतु सुझाव–

1. भविष्य में शोधार्थी माध्यमिक स्तर एवं महाविद्यालय स्तर पर इस विषय पर शोध कर सकते है।
2. भावी शोधार्थी किशोरों के संवेगात्मक एवं भाषात्मक विकास को विद्यालय से अतिरिक्त पारिवारिक एवं सामुदायिक स्थिति के आधार पर भी जाँच कर सकते है।
3. भावी शोधार्थी पाठ्य सहगामी क्रियाओं में संगीत, गायन, चित्रकारी, गृह विज्ञान के कार्य एवं हस्तकला पर भी शोध कार्य कर सकते है।
4. भावी शोधार्थी किसी संवेग विशेष यथा– आत्मगौरव, संचय प्रवृति अथवा शरणागति पर भी अपना शोध कार्य कर सकते है।
5. भावी शोधार्थी बालकों में संवेगों की अधिकता अथवा न्यूनता का उनकी वाचन शैली पर प्रभाव का भी अध्ययन कर सकते है।

6. भावी शोधार्थी बालकों की मित्र–मण्डली अथवा शैक्षिक वातावरण का उनके भाषात्मक विकास पर प्रभाव का अध्ययन कर सकते है।
7. भावी शोधार्थी व्यक्तित्व के अन्य पहलुओं जैसे– क्रियात्मक पहलु एवं सामाजिक पहलुओं पर अपना शोध कार्य कर सकते है।
8. भावी शोधार्थी व्यक्तित्व के तीनों आयाम– संवेग, शरीर एवं बुद्धि के सम्मिलित रूप से विकसित होने में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के योगदान पर शोध कार्य कर सकते है।
9. भावी शोधार्थी किशोर बालकों की अन्य व्यक्तिगत समस्याओं पर अपना शोध कार्य कर सकते है।
10. भावी शोधार्थी पाठ्य सहगामी क्रियाओं का बालकों के धार्मिक विकास में योगदान जानने हेतु शोध कार्य कर सकते है।

उपसंहार

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने उच्च माध्यमिक स्तर के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास को पाठ्य सहगामी क्रियाओ से सम्बन्धित करने का प्रयास किया है। इस शोध अध्ययन में व्यक्तित्व के भाषात्मक एवं संवेगात्मक पक्ष पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही शैक्षिक पाठ्य सहगामी क्रियाओं एवं खेलकूद पाठ्य सहगामी क्रियाओं का व्यक्तित्व के साथ सम्बन्ध देखा गया है।

शोधकर्त्री ने अपने शोध में पाया कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का व्यक्तित्व विकास (संवेगात्मक एवं भाषात्मक) का पाठ्य सहगामी क्रियाओं के साथ धनात्मक उच्च सहसम्बन्ध है।

संस्था प्रधान, अध्यापकों, अभिभावकों एवं समाज के सभी घटकों को पाठ्य सहगामी क्रियाओं का महत्व समझना चाहिए एवं उन बालकों को प्रोत्साहित करना चाहिए, जो ऐसी विशेष योग्यता रखते है।